बीजापुर में आवासीय विद्यालय

छत्तीसगढ़ राज्य का जिला बीजापुर दुर्गम परिस्थितियों के साथ ही लम्बे अरसे से नक्सल समस्या से भी जूझता रहा है। बीजापुर जिले में जब सलवाजुडुम एक स्वस्फूर्त आंदोलन नक्सलियों के खिलाफ चलाया गया, उसी समय नक्सलियों ने जिले के लगभग 300 स्कूलों के भवनों को तोड़ दिया। बहुत से लोगों को मार दिया, बहुत से बच्चे अनाथ हो गए, बहुत से गाँव नक्सलियों द्वारा खाली करा दिये गये। ऐसे समय में जिला प्रशासन के समक्ष इन प्रभावित लोगों को सुरक्षित आवास स्थान उपलब्ध कराने के अलावा इन प्रभावित परिवारों के बच्चों को शिक्षा मुहैया कराना एक बड़ी समस्या रही। लोग गाँव छोड़कर पलायन कर रहे थे एवं परिवार के साथ बच्चे भी पलायन कर रहे थे। ऐसे समय में आवासीय विद्यालय (पोर्टा केबिन) के रूप में बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया। शायद उस समय यह किसी ने नही सोचा होगा कि आवासीय विद्यालय जिले के विकास में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

केन्द्र शासन एवं राज्य शासन द्वारा सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत जिले में 28 आवासीय विद्यालयों की स्वीकृति मिली जिन्हें पोर्टा केबिन के नाम से भी जाना जाता है। इनके भवन बांस (Bamboo) से बनाये गये हैं। इन आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों को निःशुल्क शिक्षा के अतिरिक्त निःशुल्क आवासीय व्यवस्था, निःशुल्क गणवेश, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक, निःशुल्क चिकित्सा की सुविधा, निःशुल्क दैनिक उपयोगी समान की स्वीकृति एवं सुविधाऍ दी गई। आज जिले के 28 आवासीय विद्यालय (पोटा केबिन) 30 जगहों पर संचालित है जिनमें 14000 हजार बच्चे अध्ययनरत् है। ये बच्चे बहुत ही उत्साह एवं उमंग के साथ अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन आवासीय विद्यानयों में पढने वाले बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़कर शिक्षा की ऊँचाइयों को छूते हुए आज बीजापुर में संचालित 'छू लो आसमान' (IIT, BE, JEEE, PET, PMT, CPMT आदि की कोचिंग) नामक योजना के अंतर्गत गणित एवं विज्ञान विषयों के साथ अनुभवी शिक्षको के मार्गदर्शन में अध्ययनरत् है, एवं कुछ छात्र 12 वीं उत्तीर्ण होकर विज्ञान विषय लेकर शासकीय शहीद वेंकटराव महाविद्यालय बीजापुर में बी.एस.सी. कर रहे है। आवासीय विद्यालय में कुछ बच्चे ऐसे भी है जिनके माता–पिता द्वारा पढ़ाई के लिए मना किये जाने के बावजूद घर से भाग कर अध्ययन कर रहे हैं। एक समय ऐसा था, जब ये बच्चे किसी अजनबी को देख कर जंगल के अंदर भाग जाते थे, आज निर्भीक होकर आवासीय विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे है। राज्य एवं जिला प्रशासन के लिए आवासीय विद्यालयों में बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़कर उनकी निरंतरता बनाये रखना एक उपलब्धि है। अध्ययनरत् बच्चे एक उपलब्धि भी है, क्योंकि यदि रेसीडेन्सीयल स्कूल (पोटा केबिन) की व्यवस्था नही होती तो इन बच्चों को नक्सली विचार धारा से दूर रख पाना भी संभव नहीं होता।